Deccan College Bicentenary

The Deccan College, Postgraduate and Research Institute, Pune is the third oldest Educational Institute in India. The Hindoo College was founded on 6th October, 1821 by the then Bombay Presidency Government at the initiative of its Governor, Mount Stuart Elphinstone by using the Dakshina Fund, which was started by Khanderao Dabhade, a Maratha Sardar and continued by the Peshwas for propagating Sanskrit studies. This College grew from strength to strength and has emerged as one of the foremost Institutes of higher learning and research in the world. It was renamed as the Poona College on 7th June, 1851 and later as the Deccan College in October 1864.

The Deccan College was shifted to a new campus covering an area of 115 acres near Yerawada on 23rd March 1868. With the help of a munificent grant of Rs. 1 lakh donated by Sir Jamsetji Jeejeebhoy, the main building of the College was built in a beautiful Gothic style. The Deccan College, since then, has produced a number of students who rose to positions of excellence in various walks of life. They include Sir Ramkrishna Gopal Bhandarkar, the celebrated Indologist, Lokmanya Bal Gangadhar Tilak, the great nationalist leader, Gurudev Ramchandra Dattratraya Ranade, the eminent philosopher, Gopal Ganesh Agarkar, the great social reformer, Vishwanath Kashinath Rajwade, the famous historian, Dr. Dwarkanath Kotnis, the famous Indian medical practitioner who also rendered his services in China.

The College was closed down by the British Government in 1934, but it was reopened on 17th August 1939 as Deccan College, Postgraduate and Research Institute.

In the next half-century, the Institute carried out outstanding research in Ancient Indian History, Culture and Archaeology, Linguistics, Medieval and Maratha History, Sociology, Anthropology and Sanskrit studies. Eminent scholars such as the late Professors S. M. Katre, H. D. Sankalia, Irawati Karve, C. R. Sankaran, T. S. Shejwalkar, and their colleagues and successors such as Professors A. M. Ghatage, M. A. Mehendale, S. B. Deo, M. K. Dhavalikar, made the first-rate teaching and research contributions. On account of these contributions, the University has achieved a pre-eminent status not only in India but also outside the country. In recognition of the excellence achieved by the Institute both in teaching and research, the Ministry of Human Resource Development, Government of India, awarded it the status of a Deemed University in 1990.

The Department of Sanskrit and Lexicography is only of its kind in the country which combines both the branches of Sanskrit and Lexicography. The Encyclopedic Sanskrit Dictionary Project based on Historical Principles forms on integral part of this Department. It has a huge scriptorium housing more than 10 million references extracted from the entire gamut of Sanskrit literature. The Department of Archaeology is unique in the world as it has faculty dealing with different aspects of cultural heritage and scientific archaeology and is considered the second best in the world in terms of archaeological infrastructure and research output, next only to the Institute of Archaeology, London.

Recently, the University has taken up several steps to extend its academic activities to reach to the general public. The Department of Archaeology conducted certificate courses in Ancient Maharashtra and Ancient Indian thoughts. The Department of Linguistics conducted short term courses in Computational Linguistics and practical course in Phonetics for corporate language trainer and school teachers of English.

Department of Posts is pleased to issue the Commemorative Postage Stamp on Bicentenary of Deccan College, Pune for its outstanding contribution in research, especially in areas of Archaeology and Linguistic Development.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure	:	Shri Sankha Samanta
Text	:	Referenced from content provided by Deccan College, Postgraduate and Research Institute, Pune

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



डेक्कन कॉलेज की द्विशताब्दी
DECCAN COLLEGE BICENTENARY

विवरणिका BROCHURE

डेक्कन कॉलेज की द्विशताब्दी

डेक्कन कॉलेज, स्नातकोत्तर और अनुसंधान संस्थान, पुणे भारत का तीसरा सबसे पुराना शैक्षिणक संस्थान है। तत्कालीन बॉम्बे प्रेसिडेंसी सरकार ने गवर्नर माउंट स्टुअर्ट एलफिंस्टन की पहल पर 6 अक्तूबर, 1821 को 'हिंदू कॉलेज' की स्थापना की। इसके लिए दक्षिणा कोष का प्रयोग किया गया, जिसकी शुरुआत संस्कृत अध्ययन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मराठा सरदार खांडेराव दभाड़े द्वारा की गई थी और पेशवा शासकों द्वारा इसे जारी रखा गया। इस कॉलेज का उत्तरोत्तर विकास हुआ और यह विश्व में उच्च शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र के अग्रणी संस्थानों में जाना जाने लगा। 7 जून, 1851 को इसका नाम बदलकर पूना कॉलेज कर दिया गया और आगे चलकर अक्तूबर, 1864 में यह डेक्कन कॉलेज बन गया।

23 मार्च, 1868 को डेक्कन कॉलेज येरवड़ा के निकट 115 एकड़ में फैले अपने नए परिसर में स्थानांतरित हुआ। सर जमशेदजी जीजी भाई द्वारा दान की गई 1 लाख रुपए की राशि की मदद से कॉलेज के मुख्य भवन का खूबसूरत गौथिक शैली में निर्माण किया गया। डेक्कन कॉलेज के अनेक यशस्वी छात्र जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में शीर्ष स्थानों तक पहुंचे हैं। इनमें प्रसिद्ध भारतविद सर रामकृष्ण गोपाल भंडारकर, महान राष्ट्रवादी नेता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, प्रख्यात दार्शनिक गुरुदेव रामचंद्र दत्तात्रेय रानाडे, महान समाज सुधारक गोपाल गणेश अगरकर, प्रसिद्ध इतिहासकार विश्वनाथ काशीनाथ राजवाड़े और प्रख्यात भारतीय चिकित्सक डॉ. द्वारकानाथ कोटनिस शामिल थे, जिन्होंने चीन में भी सेवाएं दीं।

ब्रिटिश हुकूमत ने 1934 में इस कॉलेज को बंद कर दिया, परंतु 17 अगस्त, 1939 को इसे डेक्कन कॉलेज, स्नातकोत्तर और अनुसंधान संस्थान के नाम से पुनः खोल दिया गया।

अगली आधी सदी के दौरान, इस संस्थान ने प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व विज्ञान, भाषा विज्ञान, मध्यकालीन और मराठा इतिहास, समाज–शास्त्र, नृविज्ञान तथा संस्कृत अध्ययन के क्षेत्र में असाधारण अनुसंधान कार्य किया। स्व. प्रोफेसर एस. एम. कात्रे, एच. डी. संकालिया, इरावती कर्वे, सी. आर. शंकरन, टी. एस. शेजवालकर और उनके सहकर्मियों तथा उनके उत्तरवर्ती ए. एम. घाटागे, एम. ए. महेन्डले, एस. बी. देव, एम. के. धवलिकर जैसे प्रख्यात विद्वानों ने इस कॉलेज में उच्च स्तरीय शिक्षा तथा अनुसंधान के क्षेत्र में अमूल्य योगदान किया। इन्हीं योगदानों की बदौलत इस विश्वविद्यालय ने न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। शिक्षण के साथ–साथ अनुसंधान के क्षेत्र में प्राप्त की गई उत्कृष्टता को ध्यान में रखते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने इस संस्थान को 1990 में मानित विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया।

इस कॉलेज का संस्कृत एवं कोश विज्ञान विभाग देश में अपनी तरह का अकेला विभाग है, जिसके अंतर्गत संस्कृत तथा कोश विज्ञान शाखाओं को शामिल किया गया है। ऐतिहासिक सिद्धांतों पर आधारित विश्वकोशीय संस्कृत कोश परियोजना, इस विभाग का अभिन्न अंग है। इसके कोश लेखागार में 1 करोड़ से अधिक संदर्भ सामग्रियां मौजूद हैं, जो संपूर्ण संस्कृत साहित्य से जुटाई गई हैं। इस कॉलेज का पुरातत्व विज्ञान विभाग, संपूर्ण विश्व में इस मायने में अनूठा है कि इसमें सांस्कृतिक विरासत तथा वैज्ञानिक पुरातत्व शास्त्र के विभिन्न पहलुओं के अध्ययन के लिए विभिन्न संकाय (फेकल्टी) हैं, जो पुरातात्विक अवसंरचना तथा शोध कार्यों के दृष्टिकोण से लंदन के इंस्टीट्यूट ऑफ आर्क्योलॉजी के बाद श्रेष्ठतम है।

हाल ही में, विश्वविद्यालय ने ऐसे कदम उठाए हैं ताकि इसके अकादमिक कार्यकलाप जनसाधारण तक पहुंच सके। इसके पुरातत्व विज्ञान विभाग ने प्राचीन महाराष्ट्र तथा प्राचीन भारतीय चिंतन पर प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम संचालित किए। भाषा विज्ञान विभाग ने कॉरपोरेट क्षेत्र के भाषा प्रशिक्षकों तथा अंग्रेजी पढ़ाने वाले स्कूली अध्यापकों के लिए परिकलनीय (कंप्यूटेशनल) भाषा विज्ञान पर अल्पावधि पाठ्यक्रम तथा ध्वनि विज्ञान (फोनेटिक्स) पर प्रायोगिक पाठ्यक्रम चलाए।

डाक विभाग, डेक्कन कॉलेज, पुणे की द्विशताब्दी के उपलक्ष्य में स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है, जिसने अनुसंधान कार्य, विशेषकर पुरातत्व विज्ञान तथा भाषा विज्ञान के विकास के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान किया है।

आभार:

डाक–टिकट/ प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका : श्री शंख सामंत

पाठ : डेक्कन कॉलेज, स्नाकोत्तर तथा अनुसंधान संस्थान, पुणे द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	307157
Stamps Printed	:	307157
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00